हिंदी

सीखने के प्रतिफल	स्रोत/ संसाधन	सप्ताहवार सुझावात्मक/गतिविधियाँ (अध्यापकों के सहयोग से अभिभावकों द्वारा संचालित)
विद्यार्थी • पाठ द्वारा अर्जित विषय-वस्तु की समझ को वर्तमान परिवेश से जोड़कर रचनात्मक एवं तार्किक अभिव्यक्ति लिखित एवं मौखिक रूप से प्रदान करते हैं। • अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/ रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं, जैसे – कविता, कहानी, निबंध आदि। • हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ, जानकारी पर सामग्री, इंटरनेट, ब्लाग आदि पर छपने वाली सामग्री) को समझकर पढ़ते हैं और उस पर अपनी पसंद-नापसंद, राय आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। • ICT का उपयोग करते हुए भाषा और साहित्य (हिंदी) संबंधी कौशलों को अर्जित करते हैं। • भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे– कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना। • पाठ द्वारा अर्जित विषय-वस्तु की समझ को वर्तमान परिवेश से जोड़कर रचनात्मक एवं तार्किक अभिव्यक्ति एवं लिखित एवं मौखिक रूप से प्रदान करते हैं। • अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/ रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते है, जैसे– कविता, कहानी, निबंध आदि।	• उदाहरण के लिए एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग- 3 से कामतानाथ की कहानी (लाख की चूड़ियाँ) ली जा सकती है। संबंधित पाठ के लिए निम्न लिंक को क्लिक करें। http://ncert.nic.in/textbook/textbook.htm?hhvs1=2-18 • संभावित प्रतिफलों एवं विषय वस्तुओं को ध्यान में रखते हुए अन्य कहानियाँ भी ली जा सकती हैं। एक कहानी को पढ़ते हुए हमें मिलती-जुलती कई कहानियों की समझ विकसित करनी चाहिए। • इस विषय से संबंधित सामग्री के लिए एनसीईआरटी, सीआईईटी पाठ्यपुस्तक में मौजूद क्यूआर कोड, ई-पाठशाला, एनआर ओईआर एवं यूट्यूब पर मौजूद सामग्री भी देख सकते हैं। http://www. ncert.nic.in http://www.ciet.nic.in http://www.swayam prabha.gov.in https://www.youtube.com/channel/UCT0s92hGjqLX6p7qY9BBrSA	• सर्वप्रथम मौन रहते हुए कहानी पढ़ें एवं कहानी के मूल भाव को जानने का प्रयास करें। संभव हो तो किसी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग करते हुए अपनी आवाज़ में संवाद एवं उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए कहानी रिकॉर्ड करें। संभव हो तो आईसीटी का उपयोग करते हुए समूह में साझा करें ताकि सभी एक-दूसरे की समझ से लाभान्वित हो सकें। उपरोक्त सुविधा न होने की स्थिति में घर के ही किसी सदस्य को अपनी आवाज़ में कहानी सुनाएँ। • कहानी के मूल भाव को ध्यान में रखते हुए कहानी में आए पात्रों के लिए संवाद लिखें एवं कहानी को एक संक्षिप्त नाटक का रूप दें। आवाज बदल-बदल कर रिकॉर्ड करें एवं समूह में आईसीटी का उपयोग करते हुए साझा करें। चाहे तो घर के किसी सदस्य को शामिल कर नाटक के संवाद बोलें एवं रिकॉर्ड कर साझा करें। • लेखक का मानना है कि मशीनी युग ने बहुत सारे हाथ काट दिए हैं। इस भाव को ध्यान में रखते हुए कामों की एक सूची तैयार कीजिए जो पहले हाथ से किए जाते थे पर अब खत्म हो गए हैं या खत्म होने की कगार पर हैं। इस संदर्भ में जुटाई गई जानकारी को ध्यान में रखते हुए अनुमान के आधार पर लिखिए कि उन कारीगरों का क्या हुआ होगा? इसके लिए घर/पास-पड़ोस के बुजुर्गों से (इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से) जानकारी एकत्रित कीजिए। अन्य संबंधित संसाधनों का भी उपयोग कर सकते हैं। पाठ में भाषा संबंधी कुछ विशेषताओं की ओर ध्यान दें। जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है, लाख में कहाँ संभव है?- इस वाक्य में कहा कुछ जा रहा है लेकिन पात्र की मनोदशा के कारण इसका अर्थ भिन्न है। ऐसी मनोदशा या व्यंग्य में कहे गए वाक्यों के मायने भिन्न हो जाते हैं। पाठ में आए ऐसे और वाक्यों को छाँटे। खुद भी इस तरह के वाक्यों को लिखने का प्रयास करें। उपरोक्त गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक में शामिल अन्य कहानियाँ भी पढ़ी-समझी जा सकती है। • शिक्षक/शिक्षिकाएँ चाहे तो उपरोक्त गतिविधियों में से उपयुक्तता के आधार पर कुछ गतिविधियों/क्रिया-कलापों का उपयोग आकलन के उद्देश्य से भी कर सकते हैं। • यह कविता इस चुनौतीपूर्ण समय में भी आशा का संचार करती है। कविता के इस भाव को और भी बेहतर तरीके से समझने के लिए एनसीआरटी की पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 3 में हजारी प्रसाद द्विवेदी का संकलित निबंध 'क्या निराश हुआ जाए' भी पढ़ें। दोनों पाठ एक-दूसरे की समझ विकसित करने में सहायक साबित होंगे।

• हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ, जानकारी पर (सामग्री, इंटरनेट, ब्लाग आदि पर छपने वाली सामग्री) को समझ कर पढ़ते हैं और उस पर अपनी पसंद-नापसंद, राय आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। • ICT का उपयोग करते हुए भाषा और साहित्य (हिंदी) कौशलों को अर्जित करते हैं।	• उदाहरण के लिए एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग- 3 से कामतानाथ की कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' ली जा सकतीहै। संबंधित पाठ के लिए निम्न लिंक को क्लिक करें। http://ncert.nic. in/ textbook/textbo ok.htm?hhvs1 =2-18 • संभावित प्रतिफलों एवं विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए अन्य कहानियाँ भी ली जा सकती हैं। एक कहानी को पढ़ते हुए हमें मिलती-जुलती कई कहानियों की समझ विकसित करनी चाहिए। • इस विषय से संबंधित सामग्री के लिए एनसीईआरटी, सीआईईटी पाठ्यपुस्तक में मौजूद क्यूआरकोड, ई-पाठशाला, एन.आर.ओ.ई.आर.एवं यूट्यूब पर मौजूद सामग्री भी देख सकते हैं।	• विचार करें कि हम किसी समय को कठिन समय क्यों कहते हैं? उसी समय दुनिया में और भी बेहतर बातें/घटनाएँ हो रही होती हैं।अपने तर्क को लिखित रूप दें एवं संभव हो तो आईसीटी का उपयोग करते हुए समूह में साझा करें। इस कठिन समय में भी जो सकारात्मक बातें हुई हैं, उनकी एक सूची तैयार करें। • उचित आरोह-अवरोह के साथ भाव एवं लय को ध्यान में रखते हुए कविता का पाठ करें। पाठ को रिकॉर्ड कर संभव हो तो आईसीटी के माध्यम से समूह में साझा करें। संभव न हो तो घर के किसी सदस्य के सम्मुख/दर्पण के सामने पाठ करें। 'क्या निराश हुआ जाए' (निबंध), "यह सबसे कठिन समय नहीं'(कविता) में जो समानता का भाव है उसे लिखें। संभव हो तो अपने जीवन से संबंधित किसी घटना को भी इससे जोड़कर लिखें। • दोनों पाठों से संबंधित भाषा की बातों की जानकारी भी विस्तार से प्राप्त करें, जैसे– विराम चिह्नों का प्रयोग, संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण का गद्य-पद्य में उपयोग, कविता में शब्दों की स्थिति बदलने से अर्थ, भाव एवं लय में आए बदलाव आदि। • उपरोक्त गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक/शिक्षिकाएँ और भी रचनात्मक गतिविधियाँ/तौर-तरीके तैयार कर सकते हैं। उनके आधार पर पाठ्यपुस्तकों में शामिल अन्य कविताएँ, निबंध भी पढ़े-समझे जा सकते हैं। • शिक्षक/शिक्षिकाएँ चाहे तो उपरोक्त गतिविधियों में से उपयुक्तता के आधार पर कुछ गतिविधियों/क्रियाकलाप का उपयोग आकलन के उद्देश्य से भी कर सकते हैं।
नोट • **विषय-वस्तु (थीम)** परिवेशीय सजगता, मित्रता एवं समता का भाव • **भाषा-कौशल** समझ के साथ पढ़ना, लिखना, सुनना, बोलना संबंधी कौशलों का विकास	http://www. ncert.nic.in http://www.ciet.nic.in http://www.ciet.nic.in http://www.swaya mprabha.gov.in https://www.youtube. com/c hannel/UCT 0s92hGjqLX6p 7qY9BBrSA	